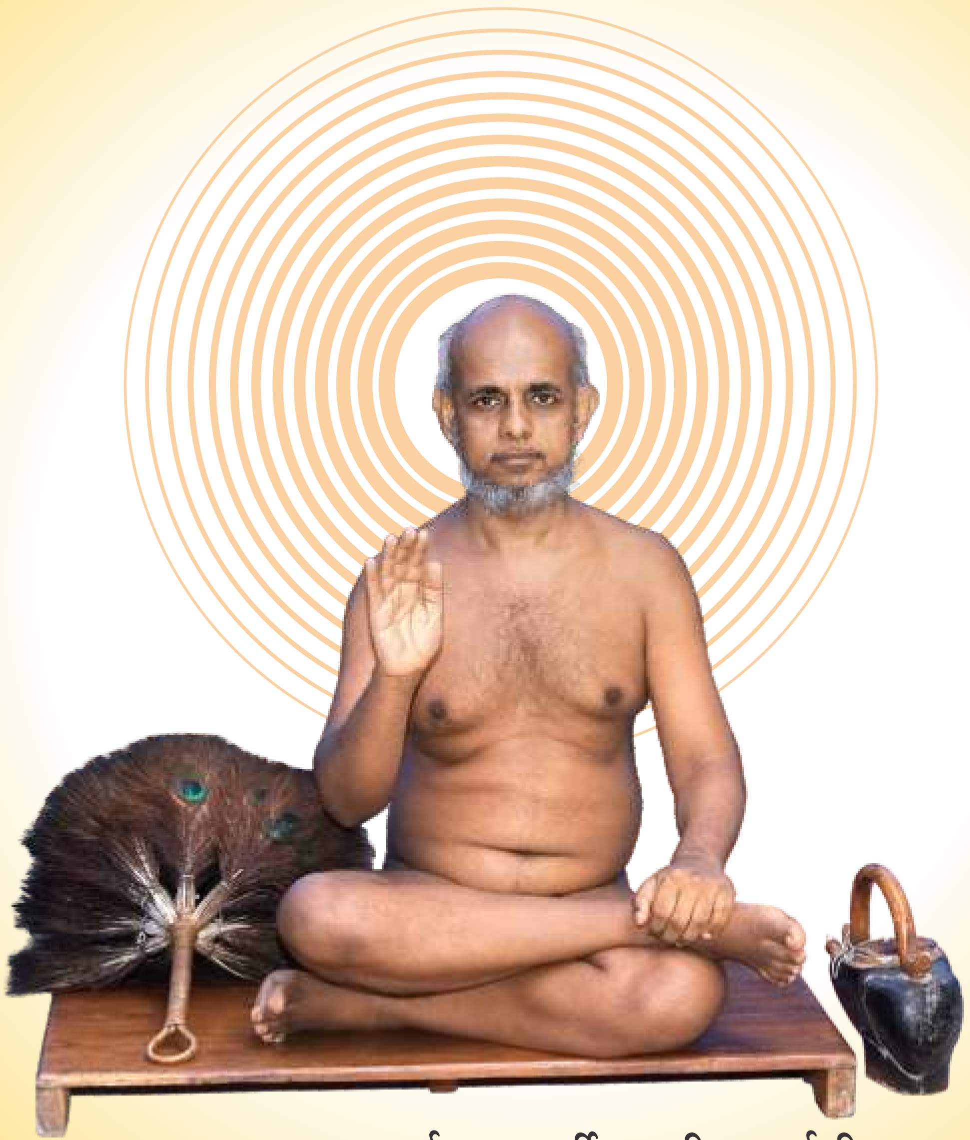

परम पूज्य तपश्चर्या–चक्रवर्ती पट्टाधीशाचार्यश्री

सुविधिसागर जी महाराज

के

50 वें जन्मदिवस के पावन अवसर पर

सुविधि–परिवार के द्वारा आयोजित

जिनवाणी-महोत्सव

सहस्रग्रन्थसंग्रह

* जन्मदिवस 19–03–1971 * मुनिदीक्षा–11–05–1989 * आचार्यपद– 20–06–2004

पट्टाधीशपद– 24–12–2010 (20–06–2004 को की गई उद्घोषणा के अनुसार)

परम पूज्य आचार्यश्री सन्मतिसागर जी महाराज के द्वारा की गई उद्घोषणाः–

हमारी समाधि के पश्चात् आपको इस संघ के संचालकपद पर नियुक्त करते हैं।

(अंकलीकर वाणी–जुलाई 2004) (अक्षयज्योति–अक्तूबर 2004)

विशद चैत्यभक्ति विधान

कृतिकार :
परम पूज्य आचार्यश्री विशदसागर जी महाराज

प्राप्ति स्थान :
विशद साहित्य केन्द्र
श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, कुआँ वाला,
जैनपुरी रेवाड़ी (हरियाणा)

(परम्परानायक)

परम पूज्य चारित्र–चक्रवर्ती,
आचार्यश्री आदिसागर जी महाराज
(अंकलीकर)

(द्वितीय पट्टाधीश)

परम पूज्य तीर्थभक्त–शिरोमणि,
आचार्यश्री महावीरकीर्ति जी महाराज

(तृतीय पट्टाधीश)

परम पूज्य सिद्धान्त–चक्रवर्ती,
आचार्यश्री सन्मतिसागर जी महाराज

(चतुर्थ पट्टाधीश)

परम पूज्य तपश्चर्या–चक्रवर्ती, आचार्यश्री सुविधिसागर जी महाराज

दिगम्बर साधु निरन्तर पगविहार करते रहते हैं। ग्रन्थभण्डार को साथ में रख कर विहार करना अशक्यप्राय: होता है। फलत: उनको ग्रन्थों के सन्दर्भ देखने में असुविधा होती है। उनकी सुविधा के लिये इस कोश का निर्माण किया गया है। इस कोश के निर्माण में किसी भी प्रकार का व्यापारिक हेतु नहीं है।

आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न श्रावकबन्धुओं से निवेदन है कि वे ग्रन्थ का विक्रय कर अध्ययन करने की परम्परा को कायम रखें।

मुखपृष्ठ पर हमने ग्रन्थकर्त्ता, अनुवादक, सम्पादक, प्रकाशक आदि के नाम दिये हैं। किसी संस्थान का कर्तुत्व हमने लुप्त नहीं किया है।

इस कोश के लिये आवश्यक ग्रन्थ हमें अनेक स्रोतों से प्राप्त हुये हैं। हम उन सभी का आभार मानते हैं।

सुविधि–परिवार

विशद

चैत्य भक्ति विधान

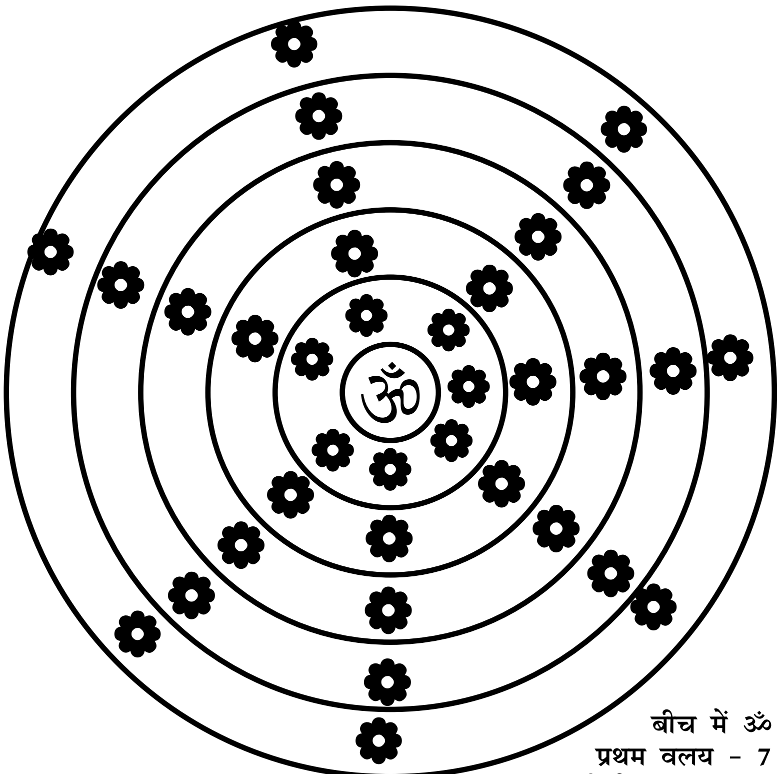

बीच में ॐ
प्रथम वलय - 7
द्वितीय वलय - 7
तृतीय वलय - 7
चतुर्थ वलय - 7
पंचम वलय - 7
कुल अर्घ्य - 35

:: पद्यानुवादकर्ता ::

प. पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति

आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज

कृति	:	**विशद चैत्य भक्ति विधान**
पद्यानुवादकर्ता	:	प. पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज
संस्करण	:	प्रथम-2018 * प्रतियाँ : 2000
संकलन	:	मुनि श्री विशालसागरजी महाराज, आर्यिका श्री भक्तिभारती माताजी
सहयोगी	:	ऐलक विदक्षसागर जी, क्षु. श्री विसोमसागरजी, क्षु. श्री वात्सल्यभारती माताजी
संपादन	:	ब्र. ज्योति दीदी 9829076085, ब्र. आस्था दीदी 9953877155, ब्र. सपना दीदी 9829127533
संयोजन	:	ब्र. सोनू दीदी, ब्र. आरती दीदी
प्राप्ति स्थल	:	1. सुरेश सेठी, 958 शांतिनगर रोड़ नं. 3 दुर्गापुरा जयपुर (राज.) 9413336017 2. श्री राजेशकुमार जैन ठेकेदार ए-107, बुध विहार, अलवर, मो. : 9414016566 3. विशद साहित्य केन्द्र श्री दिगम्बर जैन मंदिर कुआँ वाला जैनपुरी रेवाड़ी (हरियाणा), 9812502062, 09416888879 4. विशद साहित्य केन्द्र, हरीश जैन जय अरिहन्त ट्रेडर्स, 6561 नेहरू गली नियर लाल बत्ती चौक, गांधी नगर, दिल्ली मो. 09818115971,
मूल्य	:	30/- रु. मात्र
मुद्रक	:	**पारस प्रकाशन**, दिल्ली मो.: 9811374961, 9818394651, 9811363613 E-mail : pkjainparas@gmail.com, kavijain1982@gmail.com

-: अर्थ सौजन्य :-

**मुद्रक : पारस प्रकाशन, शाहदरा, दिल्ली. फोन नं. : 09811374961, 09818394651
09811363613, E-mail : pkjainparas@gmail.com, kavijain1982@gmail.com**

लघु विनय पाठ

पूजा विधि से पूर्व यह, पढ़ें विनय से पाठ।
धन्य जिनेश्वर देवजी, कर्म नशाए आठ॥1॥
शिव वनिता के ईश तुम, पाए केवल ज्ञान।
अनन्त चतुष्टय धारते, देते शिव सोपान॥2॥
पीड़ा हारी लोक में, भव दधि नाशनहार।
ज्ञायक हो त्रयलोक के, शिवपद के दातार॥3॥
धर्मामृत दायक प्रभो!, तुम हो एक जिनेन्द्र।
चरण कमल में आपके, झुकते विनत शतेन्द्र॥4॥
भवि जन को भव-सिन्धु में, एक आप आधार।
कर्म बन्ध का जीव के, करने वाले क्षार॥5॥
चरण कमल तव पूजते, विघ्न रोग हो नाश।
भवि जीवों को मोक्ष पथ, करते आप प्रकाश॥6॥
यह जग स्वारथ से भरा, सदा बढ़ाए राग।
दर्श ज्ञान दे आपका, जग को विशद विराग॥7॥
एक शरण तुम लोक में, करते भव से पार।
अतः भक्त बन के प्रभो!, आया तुमरे द्वार॥8॥

मंगल पाठ

मंगल अर्हत् सिद्ध जिन, आचार्योपाध्याय संत।
धर्मागम की अर्चना, से हो भव का अंत॥9॥
मंगल जिनगृह बिम्ब जिन, भक्ती के आधार।
जिनकी अर्चा कर मिले, मोक्ष महल का द्वार॥10॥

॥इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत॥

अथ पूजा पीठिका

ॐ जय जय जय। नमोस्तु, नमोस्तु, नमोस्तु।
णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं,
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं।

ॐ ह्रीं अनादिमूल मंत्रेभ्योनमः। (पुष्पांजलिं क्षिपामि)

चत्तारि मंगलं, अरिहन्ता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलिपण्णत्तो, धम्मो मंगलं। चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहन्ता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो, धम्मो लोगुत्तमो। चत्तारि शरणं पव्वज्जामि, अरिहंते शरणं पव्वज्जामि, सिद्धे शरणं पव्वज्जामि, साहू शरणं पव्वज्जामि, केवलिपण्णत्तं, धम्मं शरणं पव्वज्जामि।

ॐ नमोऽर्हते स्वाहा। (पुष्पांजलिं क्षिपामि)

मंगल विधान

शुद्धाशुद्ध अवस्था में कोई, णमोकार को ध्याये।
पूर्ण अमंगल नशे जीव का, मंगलमय हो जाए।
सब पापों का नाशी है जो, मंगल प्रथम कहाए।
विघ्न प्रलय विषनिर्विष शाकिनि, बाधा ना रह पाए।

।। पुष्पांजलिं क्षिपेत।।

अर्घ्यावली

जल गंधाक्षत पुष्पचरू, दीप धूप फल साथ।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य ले, पूज रहे जिन नाथ!।।

ॐ ह्रीं श्री भगवतो गर्भ-जन्म-तप-ज्ञान निर्वाण पंच कल्याणकेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।।1।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधूभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।।2।।

ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिन अष्टाधिक सहस्त्रनामेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीं द्वादशांगवाणी प्रथमानुयोग, करणानुयोग, चरणानुयोग, द्रव्यानुयोग नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।।4।।

ॐ ह्रीं ढाईद्वीप स्थित त्रिऊन नव कोटि मुनि चरणकमलेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।।5।।

"पूजा प्रतिज्ञा पाठ"

अनेकांत स्याद्वाद के धारी, अनन्त चतुष्टय विद्यावान।
मूल संघ में श्रद्धालू जन, का करने वाले कल्याण।
तीन लोक के ज्ञाता दृष्टा, जग मंगलकारी भगवान।
भाव शुद्धि पाने हे स्वामी!, करता हूँ मैं भी गुणगान।।1।।

निज स्वभाव विभाव प्रकाशक, श्री जिनेन्द्र हैं क्षेम निधान।
तीन लोकवर्ती द्रव्यों के, विस्तृत ज्ञानी हे भगवान!
हे अर्हन्त! अष्ट द्रव्यों का, पाया मैंने आलम्बन।
होकर के एकाग्रचित्त मैं, पुण्यादिक का करूँ हवन।।2।।
ॐ ह्रीं विधियज्ञ प्रतिज्ञायै जिनप्रतिमाग्रे पुष्पांजलिं क्षिपामि।

"स्वस्ति मंगल पाठ"

ऋषभ अजित सम्भव अभिनन्दन, सुमति पदम सुपार्श्वजिनेश।
चन्द्र पुष्प शीतल श्रेयांस जिन, वासुपूज्य पूजूँ तीर्थेश।।
विमलानन्त धर्म शांती जिन, कुन्थु अरहमल्ली दें श्रेय।
मुनिसुव्रत नमि नेमि पार्श्व प्रभु, वीर के पद में स्वस्ति करेय।।
इति श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर स्वस्ति मंगल विधानं पुष्पांजलिं क्षिपामि।

"परमर्षि स्वस्ति मंगल पाठ"

ऋषिवर ज्ञान ध्यान तप करके, हो जाते हैं ऋद्धीवान।
मूलभेद हैं आठ ऋद्धि के, चौंसठ उत्तर भेद महान।।
बुद्धि ऋद्धि के भेद अठारह, जिनको पाके ऋद्धीवान।
निस्पृह होकर करें साधना, 'विशद' करें स्व पर कल्याण।।1।।
ऋद्धि विक्रिया ग्यारह भेदों, वाले साधू ऋद्धीवान।
नौं भेदों युत चारण ऋद्धी, धारी साधू रहे महान।।
तप ऋद्धी के भेद सात हैं, तप करते साधू गुणवान।
मन बल वचन काय बल ऋद्धी, धारी साधू रहे प्रधान।।2।।
भेद आठ औषधि ऋद्धि के, जिनके धारी सर्व ऋशीष।
रस ऋद्धी के भेद कहे छह, रसास्वाद शुभ पाए मुनीश।।
ऋद्धि अक्षीण महानस एवं, ऋद्धि महालय धर ऋषिराज।
जिनकी अर्चा कर हो जाते, सफल सभी के सारे काज।।3।।
।। इति परमर्षि-स्वस्ति-मंगल-विधानं।।
(पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

श्री देव शास्त्र गुरु पूजन

स्थापना

देव-शास्त्र-गुरु पद नमन, विद्यमान तीर्थेश।
सिद्ध प्रभु निर्वाण भू, पूज रहे अवशेष।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरु समूह! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(चाल छन्द)

जल के यह कलश भराए, त्रय रोग नशाने आए।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।1।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

शुभ गंध बनाकर लाए, भवताप नशाने आए।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।2।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्व.स्वाहा।

अक्षत हम यहाँ चढ़ाएँ, अक्षय पदवी शुभ पाएँ
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।3।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व.स्वाहा।

सुरभित ये पुष्प चढ़ाएँ, रुज काम से मुक्ती पाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।4।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

पावन नैवेद्य चढ़ाएँ, हम क्षुधा रोग विनशाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।5।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

घृत का ये दीप जलाएँ, अज्ञान से मुक्ती पाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।6।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

अग्नी में धूप जलाएँ, हम आठों कर्म नशाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते॥7॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्व. स्वाहा।

ताजे फल यहाँ चढ़ाएँ, शुभ मोक्ष महाफल पाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते॥8॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्व. स्वाहा।

पावन ये अर्घ्य चढ़ाएँ, हम पद अनर्घ्य प्रगटाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते॥9॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो अनर्घपद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा- शांती धारा कर मिले, मन में शांति अपार।
अतः भाव से आज हम, देते शांती धार॥

शान्तये शांतिधारा

दोहा- पुष्पाञ्जलिं करते यहाँ, लिए पुष्प यह हाथ।
देव शास्त्र गुरु पद युगल, झुका रहे हम माथ॥

पुष्पाञ्जलि क्षिपेत्।

जयमाला

दोहा- देव-शास्त्र-गुरु के चरण, वन्दन करें त्रिकाल।
'विशद' भाव से आज हम, गाते हैं जयमाल॥

(तामरस छन्द)

जय-जय-जय अरहंत नमस्ते, मुक्ति वधू के कंत नमस्ते।
कर्म घातिया नाश नमस्ते, केवलज्ञान प्रकाश नमस्ते।
जगती पति जगदीश नमस्ते, सिद्ध शिला के ईश नमस्ते।
वीतराग जिनदेव नमस्ते, चरणों विशद सदैव नमस्ते॥
विद्यमान तीर्थेश नमस्ते, श्री जिनेन्द्र अवशेष नमस्ते।
जिनवाणी ॐकार नमस्ते, जैनागम शुभकार नमस्ते।
वीतराग जिन संत नमस्ते, सर्व साधु निर्ग्रन्थ नमस्ते।

अकृत्रिम जिनबिम्ब नमस्ते, कृत्रिम जिन प्रतिबिम्ब नमस्ते।।
दर्श ज्ञान चारित्र नमस्ते, धर्म क्षमादि पवित्र नमस्ते।
तीर्थ क्षेत्र निर्वाण नमस्ते, पावन पञ्चकल्याण नमस्ते।
अतिशय क्षेत्र विशाल नमस्ते, जिन तीर्थेश त्रिकाल नमस्ते।
शास्वत तीरथराज नमस्ते, 'विशद' पूजते आज नमस्ते।।

दोहा- **अर्हतादि नव देवता, जिनवाणी जिन संत।**
पूज रहे हम भाव से, पाने भव का अंत।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- **देव-शास्त्र-गुरु पूजते, भाव सहित जो लोग।**
ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य पा, पावें शिव का योग।।

।। इत्याशीर्वादः (पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत)।।

मूलनायक सहित महासमुच्चय पूजा

स्थापना

अर्हत्सिद्धाचार्य उपाध्याय, सर्व साधु जिन धर्म प्रधान।
जैनागम जिन चैत्य जिनालय, रत्नत्रय दश धर्म महान।।
सोलह कारण णमोकार शुभ, अकृत्रिम जिन चैत्यालय।
सहस्त्रनाम नन्दीश्वर मेरू, अतिशय क्षेत्र हैं मंगलमय।।
ऊर्जयन्त कैलाश शिखर जी, चम्पा, पावापुर, निर्वाण।
विहरमान, तीर्थंकर चौबिस, गणधर मुनि का है आह्वान।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित पंचकल्याणक पदालंकृत सर्व जिनेश्वर श्री अरहंत-सिद्ध-आचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म जिनागम-जिनचैत्य-जिनचैत्यालय-रत्नत्रय धर्म-दशधर्म-सोलहकारण-त्रिलोक स्थित कृत्रिम- अकृत्रिम चैत्य-चैत्यालय सहस्त्रनाम-पंचमेरू-नन्दीश्वर सम्बन्धी चैत्य चैत्यालय-कैलाश गिरि-सम्मेद शिखर-गिरनार-चम्पापुरी-पावापुर आदि निर्वाण क्षेत्र अतिशय क्षेत्र, तीस चौबीसी-विद्यमान बीस तीर्थंकर तीन कम नो करोड़ गणधरादि मुनिवराः अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्रमम सन्निहितौ भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(ज्ञानोदय छन्द)

तीनों रोग महादुखदायी, उनसे हम घबड़ाए हैं।
निर्मलता पाने हे जिनवर! प्रासुक जल यह लाए हैं।।
णमोकार नन्दीश्वर मेरू, सोलह कारण जिन तीर्थेश।
सहस्त्रनाम दशधर्म देव नव, रत्नत्रय है पूज्य विशेष।।
देव शास्त्र गुरु धर्म तीर्थ जिन, विद्यमान तीर्थंकर बीस।
कृत्रिमाकृत्रिम चैत्य जिनालय, को हम झुका रहे हैं शीश।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित पंचकल्याणक पदालंकृत सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सोलहकारण-रत्नत्रय-दशधर्म, पंच मेरू-नन्दीश्वर त्रिलोक सम्बन्धी समस्त कृत्रिम-अकृत्रिम चैत्य-चैत्यालय, सिद्ध क्षेत्र अतिशय क्षेत्र तीस चौबीसी, विद्यमान बीस तीर्थंकर तीन कम नौ करोड़ गणधरादि मुनिवराः जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रोध की ज्वाला में हे स्वामी, सदा झुलसते आए हैं।
शीतलता पाने तुम चरणों, चन्दन घिसकर लाए हैं।।
णमोकार नन्दीश्वर मेरू, सोलह कारण जिन तीर्थेश।
सहस्त्रनाम दशधर्म देव नव, रत्नत्रय है पूज्य विशेष।।
देव शास्त्र गुरु धर्म तीर्थ जिन, विद्यमान तीर्थंकर बीस।
कृत्रिमाकृत्रिम चैत्य जिनालय, को हम झुका रहे हैं शीश।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्योः संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय पद का ज्ञान जगाने, तव चरणों मे आये हैं।
अक्षय पदवी पाने हे जिन!, अक्षत चरणों लाए हैं।।
णमोकार नन्दीश्वर मेरू, सोलह कारण जिन तीर्थेश।
सहस्त्रनाम दशधर्म देव नव, रत्नत्रय है पूज्य विशेष।।
देव शास्त्र गुरू धर्म तीर्थ जिन, विद्यमान तीर्थंकर बीस।
कृत्रिमाकृत्रिम चैत्य जिनालय, को हम झुका रहे हैं शीश।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो: अक्षयपदप्राप्ताये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

काम रोग से पीड़ित होकर, निज को ना लख पाए हैं।
शीलेश्वर बनने को चरणों, पुष्प संजोकर लाए हैं।।
णमोकार नन्दीश्वर मेरू, सोलह कारण जिन तीर्थेश।
सहस्त्रनाम दशधर्म देव नव, रत्नत्रय है पूज्य विशेष।।
देव शास्त्र गुरु धर्म तीर्थ जिन, विद्यमान तीर्थंकर बीस।
कृत्रिमाकृत्रिम चैत्य जिनालय, को हम झुका रहे हैं शीश।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो: कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

मग्न हुए प्रभु आतम रस में, क्षुधा रोग विनसाए हैं।
निजगुण पाने को हे जिन, नैवेद्य चढ़ाने लाए हैं।।
णमोकार नन्दीश्वर मेरू, सोलह कारण जिन तीर्थेश।
सहस्त्रनाम दशधर्म देव नव, रत्नत्रय है पूज्य विशेष।।
देव शास्त्र गुरू धर्म तीर्थ जिन, विद्यमान तीर्थंकर बीस।
कृत्रिमाकृत्रिम चैत्य जिनालय, को हम झुका रहे हैं शीश।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो: क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भटक रहे अज्ञान तिमिर में, चित् प्रकाश ना पाए हैं।
दीप जलाकर के यह घृत का, मोह नशाने आए हैं।
णमोकार नन्दीश्वर मेरू, सोलह कारण जिन तीर्थेश।
सहस्त्रनाम दशधर्म देव नव, रत्नत्रय है पूज्य विशेष।।
देव शास्त्र गुरु धर्म तीर्थ जिन, विद्यमान तीर्थंकर बीस।
कृत्रिमाकृत्रिम चैत्य जिनालय, को हम झुका रहे हैं शीश।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो: मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

ध्यान अग्नि में कर्म खपा, निज गंध जगाने आये हैं।
सुरभित धूप सुगन्धित अनुपम, यहाँ जलाने लाए हैं॥
णमोकार नन्दीश्वर मेरू, सोलह कारण जिन तीर्थेश।
सहस्त्रनाम दशधर्म देव नव, रत्नत्रय है पूज्य विशेष॥
देव शास्त्र गुरु धर्म तीर्थ जिन, विद्यमान तीर्थंकर बीस।
कृत्रिमाकृत्रिम चैत्य जिनालय, को हम झुका रहे हैं शीश॥7॥

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो: अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

जिस फल को पाया है तुमने, उस पर हम ललचाए हैं।
परम मोक्ष फल पाने हे जिन!, फल चरणों में लाए हैं॥
णमोकार नन्दीश्वर मेरू, सोलह कारण जिन तीर्थेश।
सहस्त्रनाम दशधर्म देव नव, रत्नत्रय है पूज्य विशेष॥
देव शास्त्र गुरु धर्म तीर्थ जिन, विद्यमान तीर्थंकर बीस।
कृत्रिमाकृत्रिम चैत्य जिनालय, को हम झुका रहे हैं शीश॥8॥

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो: मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्टम वसुधा पाने को यह, अर्घ्य बनाकर लाए हैं।
अष्टगुणों की सिद्धी पाने, तव चरणों में आए हैं॥
णमोकार नन्दीश्वर मेरू, सोलह कारण जिन तीर्थेश।
सहस्त्रनाम दशधर्म देव नव, रत्नत्रय है पूज्य विशेष॥
देव शास्त्र गुरु धर्म तीर्थ जिन, विद्यमान तीर्थंकर बीस।
कृत्रिमाकृत्रिम चैत्य जिनालय, को हम झुका रहे हैं शीश॥9॥

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित पंचकल्याणक पदालंकृत सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव–शास्त्र–गुरु, सोलहकारण–रत्नत्रय–दशधर्म, पंच मेरू–नन्दीश्वर त्रिलोक सम्बन्धी समस्त कृत्रिम–अकृत्रिम चैत्य–चैत्यालय, सिद्ध क्षेत्र अतिशय क्षेत्र तीस चौबीसी, विद्यमान बीस तीर्थंकर तीन कम नौ करोड़ गणधरादि मुनिश्वरेभ्यो अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– **मोक्ष महापद पाएँगे, करके शांती धार।**
संयम धारण है विशद, इस जीवन का सार।।

।।शान्तये शान्तीधारा।।

दोहा– **रत्नत्रय को धारकर, पाएँगे शिव पंथ।**
होंगे कर्म विनाश सब, साधू बन निर्ग्रन्थ।।

।।इत्याशीर्वाद पुष्पांजलि क्षिपेत।।

जयमाला

दोहा– **पूजा के शुभ भाव से, कटे कर्म जंजाल।**
महा समुच्चय रूप से, गाते हम जयमाल।।

(शम्भू छन्द)

कर्म घातियाँ नाश किए जो, वह अर्हत् कहलाते हैं।
कर्म रहित हो ज्ञान शरीरी, सिद्ध महापद पाते हैं।।
पंचाचार का पालन करते, रत्नत्रयधारी आचार्य।
उपाध्याय से शिक्षापाते, धर्म भावनाधारी आर्य।।1।।
मोक्ष मार्ग पर बढ़ने हेतू, सर्व साधू नित करते यत्न।
सम्यक् दर्शन ज्ञान चरण हम, पूज रहे हैं तीनों रत्न।।
जिनवर कथित धर्म है पावन, श्रेष्ठ अहिंसामयी परम।
अंग बाह्य अरु अंग प्रविष्टी, रूप कहाँ है जैनागम।।2।।
कृत्रिमाकृत्रिम चैत्य लोक में, कहे गये हैं मंगलकार।
घंटा तोरण ध्वज कलशायुत, चैत्यालय सोहे मनहार।।

देव शास्त्र गुरु की पूजा से, होता जीवों का कल्याण।
भरतैरावत ढाई द्वीप में, तीस चौबीसी रही महान॥3॥
पाँच विदेहों में तीर्थंकर, विद्यमान कहलाए बीस।
जम्बू शाल्मलि तरू शाख के, जिन पद झुका रहे हम शीश॥
उत्तम क्षमा मार्दव आर्जव, शौच सत्य संयम तप जान।
त्यागाकिन्चन ब्रह्मचर्य दश, धर्म कहे शिव के सोपान॥4॥
दर्श विशुद्धी आदिक सोलह, कारण भावना है शुभकार।
काल अनादी कष्ट निवारक, महामंत्र गाया णवकार॥
सहस्रनाम हैं तीर्थंकर के, जिनका जीव करें गुणगान।
नन्दीश्वर है दीप आठवाँ, जिस पर जिनगृह हैं भगवान॥5॥
पंच मेरु में रहे चार वन, भद्रशाल नन्दन शुभकार।
तृतीय रहा सौमनस पाण्डुक, चौथा कहा है मंगलकार॥
चारों वन की चतुर्दिशा में, अकृत्रिम शास्वत जिनधाम।
रहे कुलाचल गजदन्तों पर, जिनबिम्बों पद विशद प्रणाम॥6॥
हैं निर्वाण क्षेत्र मंगलमय, अतिशय क्षेत्र हैं अपरम्पार।
सहस्रकूट शुभ समवशरण है, मानस्तंभ भी मंगलकार॥
भूत भविष्यत वर्तमान के, तीर्थंकर गाये चौबीस।
पंच भरत ऐरावत में सब, तीर्थंकर हैं सात सौ बीस॥7॥
चौदह सौ बावन गणधर कई, वर्तमान के अन्य मुनीश।
श्रेष्ठ ऋद्धियाँ चौंसठ जानो, पावन गाए सप्त ऋशीष॥
भरत बाहुबली पाण्डव हनुमान, और पूजते लव कुश राम।
पञ्च बालयति सर्व ऋृद्धियाँ, और पूजते हम शिव धाम॥8॥
गर्भ जन्म तप ज्ञान मोक्ष यह, पूज रहे पाँचों कल्याण।
जन्म भूमि है तीर्थ अयोध्या, जिसका रहे सदा श्रद्धान।
हम प्रत्यक्ष परोक्ष यहाँ से, पूज रहे सब तीरथ धाम।
वचन काय मन तीन योग से, करते बारम्बार प्रणाम॥9॥

दोहा- **पूजन की है भाव से, किया अल्प गुणगान।**
जीवन शांती मय बने, पाएँ ''विशद'' कल्याण।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित पंचकल्याणक पदालंकृत सर्व जिनेश्वर श्री नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सोलह कारण-रत्नत्रय-दश धर्म, पंच मेरू-नन्दीश्वर, त्रिलोक एवं त्रिकाल सम्बन्धी समस्त कृत्रिम अकृत्रिम चैत्य चैत्यालय, सिद्धक्षेत्र-अतिशय क्षेत्र तीस चौबीसी विद्यमान बीस तीर्थंकर तीन कम नौ करोड़ गणधरादि मुनीश्वेरभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- **हो प्रभावना धर्म की, हो शासन जयवन्त।**
अन्तिम है यह भावना, पाएँ भव का अन्त।।

।।इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

महावीर समवारण पूजा

स्थापना

समवशरण श्री महावीर का, धनपति द्वारा रचा गया।
विपुलाचल पर्वत के ऊपर, बना एक इतिहास नया।।
अन्तर बाह्य लक्ष्मी पाए, अनन्त चतुष्टय धर भगवान।
ऐसे श्री महावीर प्रभू का, भाव सहित करते आह्वान।।

दोहा- गुणानन्त के कोष जिन, महिमा का ना पार।
पद वन्दन करते विशद, नत हो बारम्बार।।

ॐ ह्रीं अन्तरंगबहिरंगलक्ष्मीसमन्वितश्रीमहावीरस्वामिन्! अत्र अवतर अवतर संवौषट इति आह्वानं। ॐ ह्रीं अन्तरंगबहिरंगलक्ष्मीसमन्वितश्रीमहावीरस्वामिन्! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। ॐ ह्रीं अन्तरंगबहिरंगलक्ष्मीसमन्वित श्रीमहावीरस्वामिन्! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(तर्ज : चौबोला छन्द)

सागर के जल से धोकर भी, मन निर्मल ना होएगा।
भक्ति अर्चना का जल सिंचन, बीज सुखों का बोएगा।।

समवशरण में महावीर जी, अतिशय शोभा पाते हैं।
जिनकी अर्चा करने पद में, सादर शीश झुकाते हैं॥1॥

ॐ ह्रीं अंतरंग-बहिरंगलक्ष्मी-समन्वित-श्रीमहावीरस्वामिने जलं निर्व. स्वाहा।

जलते हैं क्रोधादिक से हम, गल्ती करते कई प्रकार।
कर्मोदय से बचने हेतू, अर्चा करते मंगलकार॥
समवशरण में महावीर जी, अतिशय शोभा पाते हैं।
जिनकी अर्चा करने पद में, सादर शीश झुकाते हैं॥2॥

ॐ ह्रीं अंतरंग-बहिरंगलक्ष्मी-समन्वित-श्रीमहावीरस्वामिने चन्दनं निर्व. स्वाहा।

स्थिरता भक्ती में आए, चंचलता दुख का कारण है।
अक्षत से अक्षय जिन पूजा, दु:खों का श्रेष्ठ निवारण है॥
समवशरण में महावीर जी, अतिशय शोभा पाते हैं।
जिनकी अर्चा करने पद में, सादर शीश झुकाते हैं॥3॥

ॐ ह्रीं अंतरंग-बहिरंगलक्ष्मी-समन्वित-श्रीमहावीरस्वामिने अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

होके भोगों के दीवाने, चारों गतियों में भ्रमण किया।
ना प्यास आश की शांत हुई, इन्द्रिय विषयों में रमण किया॥
समवशरण में महावीर जी, अतिशय शोभा पाते हैं।
जिनकी अर्चा करने पद में, सादर शीश झुकाते हैं॥4॥

ॐ ह्रीं अंतरंग-बहिरंगलक्ष्मी-समन्वित-श्रीमहावीरस्वामिने पुष्पं निर्व. स्वाहा।

ना उदर कभी भी भरता है, निशदिन भोजन की माँग करे।
जिह्वा व्यंजन में रमती है, संयम जीवन में सौख्य भरे॥
समवशरण में महावीर जी, अतिशय शोभा पाते हैं।
जिनकी अर्चा करने पद में, सादर शीश झुकाते हैं॥5॥

ॐ ह्रीं अंतरंग-बहिरंगलक्ष्मी-समन्वित-श्रीमहावीरस्वामिने नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

निज में अज्ञान अंधेरा है, बाहर के उजाले में भटके।
ना ध्यान किया निज चेतन का, हम मोह कषायों में अटके॥
समवशरण में महावीर जी, अतिशय शोभा पाते हैं।
जिनकी अर्चा करने पद में, सादर शीश झुकाते हैं॥6॥

ॐ ह्रीं अंतरंग-बहिरंगलक्ष्मी-समन्वित-श्रीमहावीरस्वामिने दीपं निर्व. स्वाहा।

जीवन सुधारने का सोचा, पर कर्मों ने भटकाया है।
पुरुषार्थ प्रबल ना हो पाया, भव-भव में धोखा खाया है।
समवशरण में महावीर जी, अतिशय शोभा पाते हैं।
जिनकी अर्चा करने पद में, सादर शीश झुकाते हैं॥7॥

ॐ ह्रीं अंतरंग-बहिरंगलक्ष्मी-समन्वित-श्रीमहावीरस्वामिने धूपं निर्व. स्वाहा।

है नित्य निरंजन अविनाशी, आतम का आदि या अंत नहीं।
पर्याय बदलती है पल-पल, मुक्ती के शिवा कोइ पंथ नहीं॥
समवशरण में महावीर जी, अतिशय शोभा पाते हैं।
जिनकी अर्चा करने पद में, सादर शीश झुकाते हैं॥8॥

ॐ ह्रीं अंतरंग-बहिरंगलक्ष्मी-समन्वित-श्रीमहावीरस्वामिने फलं निर्व. स्वाहा।

मन मोहक ये संसार रहा, हर वस्तू मोहित करती है।
निज आत्म ध्यान की शक्ति जगे, जो कर्म कालिमा हरती है॥
समवशरण में महावीर जी, अतिशय शोभा पाते हैं।
जिनकी अर्चा करने पद में, सादर शीश झुकाते हैं॥9॥

ॐ ह्रीं अंतरंग-बहिरंगलक्ष्मी-समन्वित-श्रीमहावीरस्वामिने अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा- शांतिधारा के लिए, प्रासुक लाए नीर।
अष्ट कर्म का नाश हो, मिटे विभव की पीर॥

।।शान्तये शांतिधारा।।

दोहा- पूजा करने के लिए, द्रव्य लिया ये शुद्ध।
सम्यकदर्शन ज्ञान हम, पाएँ चरण विशुद्ध॥

।।इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

पञ्चकल्याणक के अर्घ्य

(चाल छन्द)

षष्ठी आषाढ़ सुदि पाए, सुर रत्न की झड़ी लगाए।
चहुँ दिश में छाई लाली, मानो आ गई दिवाली॥1॥

ॐ ह्रीं आषाढ़ शुक्ल षष्ठी गर्भकल्याणक प्राप्त श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तेरस सुदि चैत की आई, जन्मोत्सव की घड़ी पाई।
प्राणी जग के हर्षाए, खुश हो जयकार लगाए॥2॥

ॐ ह्रीं चैत्रसुदी तेरस जन्मकल्याणक प्राप्त श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अगहन सित दशमी गाई, प्रभु ने जिन दीक्षा पाई।
मन में वैराग्य जगाया, अन्तर का राग हटाया॥3॥

ॐ ह्रीं मगसिर सुदी दशमी तपकल्याणक प्राप्त श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वैशाख सु दशमी पाए, प्रभु केवल ज्ञान जगाए।
सुर समवशरण बनवाए, जिन दिव्य ध्वनि सुनाएँ॥4॥

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्ला दशमी केवलज्ञान प्राप्त श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों की सांकल तोड़े, मुक्ती से नाता जोड़े।
कार्तिक की अमावस पाए, शिवपुर में धाम बनाए॥5॥

ॐ ह्रीं कार्तिक अमावस्यायां मोक्ष कल्याणक प्राप्त श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- तीन लोक में श्रेष्ठ है, महावीर सन्देश।
पाने सब व्याकुल रहे, ब्रह्मा विष्णु महेश॥

(ज्ञानोदय छंद)

प्रभु दर्शन से दर्शन मिलता, वाणी से शुभ सन्देश मिले।
चर्या से चारित मिलता है, सम्यक् तप करके हृदय खिले॥
सभी अमंगल हरने वाले, हैं वीर प्रभु पहले मंगल।
श्रद्धा भक्ति पूजा करके, हो जाय नाश सारे कल मल॥
सिद्धारथ के नन्दन बनकर, प्रभु कुण्डलपुर में जन्म लिए।
माता त्रिशला की कुक्षि को, आकर प्रभु जी धन्य किए॥
जब वर्धमान का जन्म हुआ, सारे जग में मंगल छाया।
सुर नर पशु की क्या बात करें, नरकों में सुख का क्षण आया॥
इन्द्रों ने जय-जय कार किए, नर सुर पशु जग के हर्षाए।
सौधर्म इन्द्र ने खुश होकर, कई रत्न कुबेर से वर्षाए॥
बचपन-बचपन में बीत गया, फिर युवा अवस्था को पाया।
करके कई कौतूहल जग में, लोगों के मन को हर्षाया॥
जब योग्य अवस्था भोगों की, तब योग प्रभु ने धार लिया।
नहि ब्याह किया गृह त्याग दिया, संयम से नाता जोड़ लिया॥
प्रभु पंच मुष्ठि केशलुंच कर, वीतराग मुद्रा धारी।
शुभ ध्यान लगाया आतम का, प्रभु हुए स्वयं ही अविकारी॥
तप किए प्रभु द्वादश वर्षों, अरु कर्मों को निर्जीर्ण किए।
फिर शुद्ध चेतना के चिन्तन से, कर्म घातिया क्षीण किए॥
तब केवल ज्ञान प्रकाश हुआ, बन गये प्रभु अन्तर्यामी।
शुभ समवशरण की रचना कर, सुर इन्द्र हुए प्रभु अनुगामी॥
जब प्रभु की वाणी नहीं खिरी, जग के नर नारी अकुलाए।
चौसठ दिन यूँ ही बीत गये, प्रभु की वाणी न सुन पाए॥
सौधर्म इन्द्र चिन्तित होकर, अपने मन में यह सोच रहा।
है समोशरण में कमी कोई, या मेरा है दुर्भाग्य अहा॥
फिर अवधि ज्ञान से जान लिया, गणधर स्वामी न आए हैं।

इसलिए अभी तक जिनवर का, सन्देश नहीं सुन पाए हैं॥
फिर इन्द्र बटुक का भेष धार, गौतम स्वामी के पास गये।
अरु अहं नष्ट करने हेतु, वह प्रश्न किए कुछ नये-नये॥
वह समाधान कर सके नहीं, फिर समवशरण की ओर गये।
गौतम को सबसे पहले ही, शुभ मानस्तंभ के दर्श भये॥
होते ही मान गलित गौतम, प्रभु के चरणों झुक जाते हैं।
तब रत्नत्रय को धार स्वयं, चऊ ज्ञान प्रकट कर पाते हैं॥
विपुलाचल पर्वत के ऊपर, प्रभु की वाणी से बोध मिला।
हर श्रावक का मन प्रमुदित था, हर प्राणी का भी हृदय खिला॥
हे वीर! तुम्हारे शासन में, हम सेवक बनकर आए हैं।
रत्नत्रय की निधियाँ पाने के, हमने शुभ भाव बनाए हैं॥
मन में मेरे कुछ चाह नहीं, बश रत्नत्रय का दान करो।
प्रभु विशद ज्ञान की किरणों से, हमको सद ज्ञान प्रदान करो॥
तुम वीर बली हो महाबली, तुमने सारा जग तारा है।
यह तुमको भक्त पुकार रहा, इसको क्यों नाथ विसारा है॥

(छन्द घत्तानन्द)

जय महावीर सन्मति महान्, जय अतीवीर जय वर्द्धमान।
जय जय जिनेन्द्र जय वीरनाथ, जय जय जिन चरणों झुका माथ॥

ॐ ह्रीं अंतरंग बहिरंग लक्ष्मी समन्वित श्री महावीर जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- वीर प्रभु की भक्ति कर, साता मिले विशेष।
रोक शोक सब शान्त हों, रहे कोई न शेष॥

(इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

श्री चैत्य भक्ति पूजा

स्थापना

वीर प्रभु के समवशरण में, इन्द्रभूति गौतम ब्राह्मण।
मानस्तंभ का दर्श किया, तव मान हुआ उसका खण्डन॥
सम्यक् श्रद्धा धारी होकर, जयति भगवान ये उच्चारण।
हाथ जोड़ कर किया प्रभू के, चरणों में जाके वन्दन॥

दोहा- चैत्य भक्ति स्तोत्र शुभ, जग में रहा महान।
कृत्रिमा कृत्रिम चैत्य का, करते उर आह्वान।

ॐ ह्रीं श्री गौतमस्वामिकृत श्री महावीर तीर्थंकर वन्दना स्तुति स्वरूप चैत्य भक्ति महास्तोत्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं श्री गौतमस्वामिकृत श्री महावीर तीर्थंकर वन्दना स्तुति स्वरूप चैत्य भक्ति महास्तोत्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं श्री गौतमस्वामिकृत श्री महावीर तीर्थंकर वन्दना स्तुति स्वरूप चैत्य भक्ति महास्तोत्र! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(वीर छन्द)

शीतल जल की निर्मल धारा, हे प्रभु! चरण चढ़ाते हैं।
जन्म जरादिक क्षय करने को, जिन पद में सिरनाते हैं॥
चैत्य भक्ति आराधन करके, प्रभु के गुण को गाते हैं।
कृत्रिमा कृत्रिम जिन चैत्यों को, सादर शीश झुकाते हैं॥1॥

ॐ ह्रीं श्री गौतमस्वामीकृत श्री महावीर तीर्थंकर वन्दना स्तुतिस्वरूप चैत्यभक्ति महास्तोत्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

शीतल चंदन मलयागिरि का, केसर में यह घिस लाए।
भवाताप का कर विनाश हम, शिव पद पाने को आए॥
चैत्य भक्ति आराधन करके, प्रभु के गुण को गाते हैं।
कृत्रिमा-कृत्रिम जिन चैत्यों को, सादर शीश झुकाते हैं॥2॥

ॐ ह्रीं श्री गौतमस्वामिकृत श्री महावीर तीर्थंकर वन्दना स्तुतिस्वरूप चैत्यभक्ति महास्तोत्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

उज्जवल धवल अखण्डित अक्षत, निर्मल नीर में धो लाए।
अक्षय पद के भाव बने मम, अक्षय पद पाने आए॥
चैत्य भक्ति आराधन करके प्रभु के गुण को गाते हैं।
कृत्रिमा-कृत्रिम जिन चैत्यों को, सादर शीश झुकाते हैं॥3॥

ॐ ह्रीं श्री गौतमस्वामिकृत श्री महावीर तीर्थंकर वन्दना स्तुतिस्वरूप चैत्यभक्ति महास्तोत्राय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

सुरभित पुष्प सुकोमल सुन्दर, यहाँ चढ़ाने को लाए।
काम रोग का योग नशाने, नाथ शरण में हम आए॥
चैत्य भक्ति आराधन करके प्रभु के गुण को गाते हैं।
कृत्रिमा-कृत्रिम जिन चैत्यों को, सादर शीश झुकाते हैं॥4॥

ॐ ह्रीं श्री गौतमस्वामिकृत श्री महावीर तीर्थंकर वन्दना स्तुतिस्वरूप चैत्यभक्ति महास्तोत्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

चेतन रस के सु चरु बनाकर, जिन चरणों में हम लाए।
क्षुधा व्याधि विध्वंश होय मम, आत्मतृप्ति पाने आए॥
चैत्य भक्ति आराधन करके, प्रभु के गुण को गाते हैं।
कृत्रिमा-कृत्रिम जिन चैत्यों को, सादर शीश झुकाते हैं॥5॥

ॐ ह्रीं श्री गौतमस्वामिकृत श्री महावीर तीर्थंकर वन्दना स्तुतिस्वरूप चैत्यभक्ति महास्तोत्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जगमग-जगमग दीप जलाकर, जिन अर्चा करने लाए।
मोह महातम के विनाश को, नाथ शरण में हम आए॥
चैत्य भक्ति आराधन करके प्रभु के गुण को गाते हैं।
कृत्रिमा-कृत्रिम जिन चैत्यों को, सादर शीश झुकाते हैं॥6॥

ॐ ह्रीं श्री गौतमस्वामिकृत श्री महावीर तीर्थंकर वन्दना स्तुतिस्वरूप चैत्यभक्ति महास्तोत्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूपायन में दश धर्मों की, धूप श्रेष्ठ खेने लाए।
अष्ट कर्म के नष्ट हेतु हम, जिन पूजा करने आए॥
चैत्य भक्ति आराधन करके प्रभु के गुण को गाते हैं।
कृत्रिमा-कृत्रिम जिन चैत्यों को, सादर शीश झुकाते हैं॥7॥

ॐ ह्रीं श्री गौतमस्वामिकृत श्री महावीर तीर्थंकर वन्दना स्तुतिस्वरूप चैत्यभक्ति महास्तोत्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सरस श्रेष्ठ फल ताजे अनुपम, रजत थाल में भर लाए।
दिव्य महाफल पाने को हम, फल से पूजा करने आए॥
चैत्य भक्ति आराधन करके प्रभु के गुण को गाते हैं।
कृत्रिमा-कृत्रिम जिन चैत्यों को, सादर शीश झुकाते हैं॥8॥

ॐ ह्रीं श्री गौतमस्वामिकृत श्री महावीर तीर्थंकर वन्दना स्तुतिस्वरूप चैत्यभक्ति महास्तोत्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ्य अपूर्व बना निज गुण का, भेंट चढ़ाने को लाए।
पद अनर्घ्य पाने हे स्वामी!, चरण शरण में हम आए॥
चैत्य भक्ति आराधन करके, प्रभु के गुण को गाते हैं।
कृत्रिमा-कृत्रिम जिन चैत्यों को, सादर शीश झुकाते हैं॥9॥

ॐ ह्रीं श्री गौतमस्वामिकृत श्री महावीर तीर्थंकर वन्दना स्तुतिस्वरूप चैत्यभक्ति महास्तोत्राय अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- **चैत्य भक्ति के हम यहाँ, चढ़ा रहे हैं अर्घ्य।**
भाते हैं हम भावना, पाएँ सुपद अनर्घ्य॥

॥ मण्डलस्योपरि पुष्पांजलि क्षिपेत् ॥

अथ प्रत्येक अर्घ्य

(35 अर्घ्य)

जयति भगवान् हेमाम्भोजप्रचारविजृंभिता-
वमरमुकुटच्छायोग्दीर्णप्रभापरिचुम्बितौ ।
कलुषहृदया मानोद्भ्रान्ताः परस्परवैरिणो
विगतकलुषाः पादौ यस्य प्रपद्य विशश्वसुः॥1॥

देवों के मुकुटों की कांती, से शोभित हैं चरण युगल।
जिनके गगन गमन में नीचे, सुर रचते हैं स्वर्ण कमल॥
कलुषित मन वाले मानी के, बैर का भी हो जाता अंत।
ऐसे उभयलक्ष्मी धारी, केवल ज्ञानी हों जयवंत॥1॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरस्वामी-श्रीविहारमाहात्म्यप्रगटनपराय श्रीगौतमस्वामिकृत चैत्यभक्तिमहास्तोत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।1।।

तदनु जयति श्रेयान् धर्मः प्रवृद्धमहोदयः
कुगति-विपथ-क्लेशाद्योऽसौ विपाशयति प्रजाः।
परिणतनयस्याङ्गीभावाद्विविक्तविकल्पितं
भवतु भवतस्त्रातृ त्रेधा जिनेन्द्रवचोऽमृतम्।।2।।

क्लेश कुगति से जो जीवों के, अशुभ कर्म का करता अंत।
श्रेष्ठ धर्म अभ्युदय दाता, वीतरागमय हों जयवंत।।
व्यय उत्पाद ध्रौव्य नय संयुत, अंग पूर्व के भेद समेत।
अमृत तुल्य वचन जिनवर के, भवि जीवों की रक्षा हेत।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरस्वामी-श्रेयस्करधर्ममाहात्म्यप्रगटनपराय श्रीगौतमस्वामिकृत चैत्यभक्तिमहास्तोत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।2।।

तदनु जयताज्जैनी वित्तिः प्रभंगतरंगिणी।
प्रभवविगमध्रौव्यद्रव्यस्वभावविभाविनी।।
निरुपमसुखस्येदं द्वारं विघट्य निरर्गलं।
विगतरजसं मोक्षं देयान्निरत्ययमव्ययम्।।3।।

भंग तरंग से युक्त द्रव्य का, व्यय उत्पाद ध्रौव्य स्वभाव।
हो जयवंत जैन की वृत्ती, जिसमें हैं सब दोषाभाव।।
अव्यय व्याधि रहित सुख निरुपम, खोल रहा है मुक्ती द्वार।
कर्म रहित शाश्वत सुखदायी, देव धर्म आगम जिन सार।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरस्वामी-जैनीवाणीमाहात्म्यप्रगटनपराय श्रीगौतमस्वामिकृत चैत्यभक्तिमहास्तोत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।3।।

अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायेभ्यस्तथा च साधुभ्यः।
सर्वजगद्वन्द्येभ्यो नमोऽस्तु सर्वत्र सर्वेभ्यः।।4।।

अर्हत् सिद्धाचार्य उपाध्याय, सर्व साधु को है वंदन।
सर्व जगत् से वंदनीय जो, सब प्रकार से उन्हें नमन्।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीगौतमस्वामिकृतपंचपरमेष्ठिनमस्कारसमन्विताय चैत्यभक्तिमहास्तोत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।4।।

मोहादिसर्वदोषारिघातकेभ्यः सदाहतरजोभ्यः।
विरहितरहस्कृतेभ्यः पूजार्हेभ्यो नमोऽर्हद्भ्यः।।5।।

मोहादिक सब दोष अरि के, नाशक रज चऊ कर्म विहीन।
पूजा योग्य प्रभू अर्हत् को, नमन् करूँ हो चरणों लीन।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीगौतमस्वामिकृतार्हन्नमस्कारसमन्विताय श्रीचैत्यभक्तिमहास्तोत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।5।।

क्षान्त्यार्जवादिगुणगणसुसाधनं सकललोकहितहेतुं।
शुभधामनि धातारं वन्दे धर्मं जिनेन्द्रोक्तम्।।6।।

क्षमा आदि गुण गण के साधक, सर्व लोक हित के कारण।
स्वर्ग मोक्ष को देने वाले, जैन धर्म को करूँ नमन्।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीगौतमस्वामिकृतजिनधर्मवन्दनासमन्विताय श्रीचैत्यभक्तिमहास्तोत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।6।।

मिथ्याज्ञानतमोवृतलोकैकज्योतिरमितगमयोगि।
सांगोपांगमजेयं जैनं वचनं सदा वन्दे।।7।।

मिथ्या ज्ञान तमोवृत जग को, अनुपम श्रुत है ज्योति रूप।
अंग पूर्वमय विजयशील जिन, श्रुत को वंदन आत्म स्वरूप।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीगौतमस्वामिकृतजिनागमवन्दनासमेताय श्रीचैत्यभक्तिमहास्तोत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भवनविमानज्योतिर्व्यंतरनरलोकविश्वचैत्यानि।
त्रिजगदभिवन्दितानां वन्दे त्रेधा जिनेन्द्राणां।।8।।

तीन लोक में वंदनीय जिन, ज्योतिष व्यंतर भवन विमान।
मनुज लोक के सब चैत्यों का, तीन योग से करते ध्यान।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीगौतमस्वामिकृतजिनचैत्यवन्दनासमेताय श्रीचैत्यभक्तिमहास्तोत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।8।।

भुवनत्रयेऽपि भुवनत्रयाधिपाभ्यर्च्यतीर्थकर्तृणाम्।
वन्दे भवाग्निशान्त्यै विभवानामालयालीस्ताः।।9।।

तीन लोक के अधिप रहित भव, से पूजित तीर्थंकर देव।
तीन लोक के चैत्यालय मैं, भव शांती को नमूँ सदैव॥9॥

ॐ ह्रीं श्रीगौतमस्वामिकृतजिनचैत्यालयवन्दनासमेताय श्रीचैत्यभक्तिमहास्तोत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥9॥

इति पंच महापुरुषाः प्रणुता जिनधर्म-वचन-चैत्यानि।
चैत्यालयाश्च विमलां दिशन्तु बोधिं बुधजनेष्टां॥10॥

परमेष्ठी जिनधर्म जिनागम, चैत्य चैत्यालय रहे महान्।
ज्ञानी जन गणधर आदिक शुभ, हमको भी देवें सद्ज्ञान॥10॥

ॐ ह्रीं श्रीगौतमस्वामिकृतनवदेववन्दनासमन्विताय श्रीचैत्यभक्तिमहास्तोत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥10॥

अकृतानि कृतानि चाप्रमेयद्युतिमन्ति द्युतिमत्सु मन्दिरेषु।
मनुजामरपूजितानि वंदे प्रतिबिम्बानि जगत्त्रये जिनानाम्॥11॥

तीन लोक में नर सुर पूजित, अमित कांति शोभित अविराम।
कृत्रिमाकृत्रिम अमित कांतियुत, जिन बिम्बों को करूँ प्रणाम॥11॥

ॐ ह्रीं श्रीगौतमस्वामिकृतत्रैलोक्यसंबंधि-अकृत्रिमकृत्रिमजिनप्रतिमावंदना-समन्विताय श्रीचैत्यभक्तिमहास्तोत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥11॥

द्युतिमंडलभासुराङ्गयष्टीः प्रतिमा अप्रतिमा जिनोत्तमानाम्।
भवनेषु विभूतये प्रवृत्ता वपुषा प्राञ्जलिरस्मि वन्दमानः॥112॥

अमित तेजमय देह यष्टि युत, तीन लोक में कांतीमान।
वैभव संयुत जिन प्रतिमा को, बद्ध अंजली करूँ प्रणाम॥12॥

ॐ ह्रीं श्रीगौतमस्वामिकृतसर्व-अप्रतिमजिनप्रतिमावंदनासमन्विताय श्रीचैत्य-भक्तिमहास्तोत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥12॥

विगतायुधविक्रियाविभूषाः प्रकृतिस्थाः कृतिनां जिनेश्वराणाम्।
प्रतिमाः प्रतिमागृहेषु कांत्याप्रतिमाः कल्मषशान्तयेऽभिवन्दे॥13॥

जिनगृह में कृतकृत्य जिनेश्वर, वस्त्राभूषण अस्त्र विहीन।
जिन प्रतिमा स्वभाविक अनुपम, वन्दूँ पाप होय सब क्षीण॥13॥

ॐ ह्रीं श्रीगौतमस्वामिकृतायुधाभरणवर्जितप्रकृतिरूपजिनप्रतिमावंदना-समन्विताय श्रीचैत्यभक्तिमहास्तोत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।13।।

कथयंति कषायमुक्तिलक्ष्मीं परया शान्ततया भवान्तकानाम्।
प्रणमाम्यभिरूपमूर्तिमंति प्रतिरूपाणि विशुद्धये जिनानाम्।।14।।

भव अन्तक बहु शांत सुसुंदर, उभय लक्ष्मी युक्त महान्।
जिन प्रतिमा सूचित करती शुभ, आत्म विशुद्धी सहित प्रणाम।।14।।

ॐ ह्रीं श्रीगौतमस्वामिकृत-परमशांतमुद्रायुतसर्वजिनप्रतिमावंदनासमन्विताय श्रीचैत्यभक्तिमहास्तोत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।14।।

यदिदं मम सिद्धभक्तिनीतं सुकृतं दुष्कृतवर्त्मरोधि तेन।
पटुना जिनधर्म एव भक्तिर्भवताज्जन्मनि जन्मनि स्थिरा मे।।15।।

जिन भक्ती से प्राप्त पुण्य मम्, शीघ्र ही दुष्कृत को खोवे।
पुण्य के फल से जन्म-जन्म में, जैन धर्म ही मम् होवे।।15।।

ॐ ह्रीं श्रीगौतमस्वामिकृत-भवभवजिनधर्मभक्तिफलयाचनासमन्विताय श्रीचैत्यभक्तिमहास्तोत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।15।।

अर्हतां सर्वभावानां दर्शनज्ञानसम्पदाम्।
कीर्तयिष्यामि चैत्यानि यथाबुद्धि विशुद्धये।।16।।

युगपत सब द्रव्यों के ज्ञाता, दर्शन ज्ञान संपदा रूप।
जिन बिम्बों का आत्म विशुद्धी, हेतु करूँ गुणगान अनूप।।16।।

ॐ ह्रीं श्रीगौतमस्वामिकृत-अर्हद्बिम्बकीर्तनसमन्विताय श्रीचैत्यभक्तिमहास्तोत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।16।।

श्रीमद्भवनवासस्थाः स्वयंभासुरमूर्तयः।
वंदिता नो विधेयासुः प्रतिमाः परमां गतिम्।।17।।

भवनालय में श्री से सज्जित, जिन प्रतिमाएँ दीप्तीमान।
श्रेष्ठसुगति दें हम भव्यों को, करते बारम्बार प्रणाम।।17।।

ॐ ह्रीं श्रीगौतमस्वामिकृत-भवनवासिगृहजिनालयजिनप्रतिमावंदनासमन्विताय श्रीचैत्यभक्तिमहास्तोत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।17।।

यावन्ति सन्ति लोकेऽस्मिन्नकृतानि कृतानि च।
तानि सर्वाणि चैत्यानि वन्दे भूयांसि भूतये।।18।।

कृत्रिमाकृत्रिम जिन प्रतिमाएँ, मध्यलोक में शोभ रहीं।
उन सबको है नमन् हमारा, उभय लक्ष्मी युक्त कहीं।।18।।

ॐ ह्रीं श्रीगौतमस्वामिकृतमध्यलोकसंबंधि–सर्व–अकृत्रिमकृत्रिमजिनप्रतिमा–वंदनासमन्विताय श्रीचैत्यभक्तिमहास्तोत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।18।।

ये वयन्तरविमानेषु स्थेयांसः प्रतिमागृहाः।
ते च संख्यामतिक्रान्ताः सन्तु नो दोषविच्छिदे।।19।।

व्यंतर देव विमानों में शुभ, जिन चैत्यालय संख्यातीत।
सब दोषों के नाश हेतु वह, बन जावें मेरे शुभ मीत।।19।।

ॐ ह्रीं श्रीगौतमस्वामिकृत–व्यंतरदेवगृहासंख्यातजिनालयजिनप्रतिमावंदना–समन्विताय श्रीचैत्यभक्तिमहास्तोत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।19।।

ज्योतिषामथ लोकस्य भूतयेऽद्भुतसम्पदः।
गृहाः स्वयंभुवः सन्ति विमानेषु नमामि तान्।।20।।

ज्योतिष्लोक में जिन चैत्यालय, बने हैं अतिशय वैभववान।
उभय लक्ष्मी प्राप्ति हेतु हम, भाव सहित करते गुणगान।।20।।

ॐ ह्रीं श्रीगौतमस्वामिकृत–ज्योतिर्वासिदेवविमानसंबंधि–असंख्यातजिनालय–जिनप्रतिमावंदनासमन्विताय श्रीचैत्यभक्तिमहास्तोत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।20।।

वन्दे सुरकिरीटाग्रमणिच्छायाभिषेचनम्।
याः क्रमेणैव सेवन्ते तदर्चाः सिद्धिलब्धये।।21।।

सुर सुरेन्द्र के मुकुटसुमणि की, कांती से पद में अभिषेक।
मानो पूजनीय प्रतिमाएँ, वन्दूँ उनको माथा टेक।।21।।

ॐ ह्रीं श्रीगौतमस्वामिकृत–वैमानिकदेवसंबंधिसर्वजिनालयजिनप्रतिमावंदना–समन्विताय श्रीचैत्यभक्तिमहास्तोत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।21।।

इति स्तुतिपथातीतश्रीभृतामर्हतां मम।
चैत्यानामस्तु संकीर्तिः सर्वास्रवनिरोधिनी।।22।।

अतिशय शोभा युक्त श्री जिन, की प्रतिमाएँ अतुल महान्।
स्तुति करना मुश्किल जिनकी, मम् आस्रव की कर दें हान॥22॥

ॐ ह्रीं श्रीगौतमस्वामिकृत-सर्वजिनप्रतिमास्तुतिफलसर्वास्रवसंवरयाचना-समन्विताय श्रीचैत्यभक्तिमहास्तोत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।22।।

अर्हन्महानदस्य त्रिभुवनभव्यजनतीर्थयात्रिकदुरितम्-
प्रक्षालनैककारणमतिलौकिककुहकतीर्थमुत्तमतीर्थम्॥23॥

श्रेष्ठ तीर्थ अर्हंत महानद, भवि जीवों के पाप शमन।
तीन लोक में कारण उत्तम, लौकिक दंभ का करें दमन॥23॥

ॐ ह्रीं श्रीगौतमस्वामिकथित-अर्हन्महानदीसर्वोत्तमतीर्थमध्यस्नानकारक-त्रिभुवनभव्यजनपापमलप्रक्षालनकारणसमन्विताय श्रीचैत्यभक्तिमहास्तोत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।23।।

लोकालोकसुतत्त्वप्रत्यवबोधनसमर्थदिव्यज्ञान-
प्रत्यहवहत्प्रवाहं व्रतशीलामलविशालकूलद्वितयम्॥24॥

लोकालोक के सुतत्वों का, जिसमें बहता ज्ञान प्रवाह।
शील और व्रत तटद्वय जिसके, भविजन जिसकी रखते चाह॥24॥

ॐ ह्रीं श्रीगौतमस्वामिकथित-दिव्यज्ञानजलव्रतशीलकूलयुत-अर्हन्महातीर्थ-समन्विताय श्रीचैत्यभक्तिमहास्तोत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।24।।

शुक्लध्यानस्तिमितस्थितराजद्राजहंसराजितमसकृत्।
स्वाध्यायमंद्रघोषं नानागुणसमितिगुप्ति-सिकतासुभगम्॥25॥

शुक्लध्यान में लीन मुनीश्वर, राजहंस सम शोभ रहे।
गुप्ति समिति गुण की बालू है, स्वाध्याय की गूँज बहे॥25॥

ॐ ह्रीं श्रीगौतमस्वामिकथित-मुनिगणस्वाध्यायघोष-समितिगुप्त्यादिगुणसिक-तायुतसमन्विताय श्रीचैत्यभक्तिमहास्तोत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।25।।

क्षान्त्यावर्तसहस्रं सर्वदया-विकचकुसुमविलसल्लतिकम्
दुःसहपरीषहाख्यद्रुततररंगत्तरंगभंगुरनिकरम्॥26॥

उत्तम क्षमारूप हज्जारों भवरें, उठतीं जहाँ अनेक।
शुभम् लताएँ जग जीवों पर, खिलते सुमन दया के नेक॥

जहाँ कठिन अत्यंत परीषह, अतिशीघ्र हो जाँय विलय।
क्षणभंगुर उठ रही तरंगों, का समूह हो जाए क्षय।।26।।

ॐ ह्रीं श्रीगौतमस्वामिकथितक्षमादि–आवर्त–सर्वदयापुष्प–परीषहतरंगसहित–अर्हन्महानदीतीर्थसमन्विताय श्रीचैत्यभक्तिमहास्तोत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।26।।

व्यपगतकषायफेनं रागद्वेषादिदोष–शैवलरहितम्।
अत्यस्तमोह–कर्दममतिदूरनिरस्तमरण–मकरप्रकरम्।।27।।

फेन कषायों का क्षय करके, रागादिक सब दोष विहीन।
मोहादिक कर्दम से वर्जित, मरण मगर मच्छों से हीन।।27।।

ॐ ह्रीं श्रीगौतमस्वामिकथित–कषायमोहमरणादि–फेनशैवालमकरादिजंतु–रहित–अर्हन्महानदीतीर्थसमन्विताय श्रीचैत्यभक्तिमहास्तोत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।27।।

ऋषिवृषभस्तुतिमंद्रोद्रेकितनिर्घोष–विविधविहगध्वानम्।
विविधतपोनिधि–पुलिनं सास्रवसंवरणनिर्जरानिस्रवणम्।।28।।

मुनि श्रेष्ठ की स्तुति गुंजन, मंद सबल खग का मनहर।
विविध मुनीश्वर पुलिन जहाँ पर, संवर निर्जर का निर्झर।।28।।

ॐ ह्रीं श्रीगौतमस्वामिकथित–ऋषिगणस्तुतिकृतमधुरध्वनितपोनिधिपुलिनयुत–अर्हन्महानदीतीर्थसमन्विताय श्रीचैत्यभक्तिमहास्तोत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।28।।

गणधरचक्रधरेन्द्रप्रभृतिमहाभव्यपुंडरीकैः पुरुषैः।
बहुभिः स्नातं भक्त्या कलिकलुषमलापकर्षणार्थममेयम्।।29।।

चक्री इन्द्र गणधर आदिक सब, महाभव्य पुरुषों में ज्येष्ठ।
विविध पुरुष कलिकाल के मल को, नाश हेतु भक्ती अति श्रेष्ठ।।29।।

ॐ ह्रीं श्रीगौतमस्वामिकथित–गणधरचक्रवर्तिइंद्रादिकृतस्नानसहित–अर्हन्महा–नदीतीर्थसमन्विताय श्रीचैत्यभक्तिमहास्तोत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।29।।

अवतीर्णवतः स्नातुं ममापि दुस्तरसमस्तदुरितं दूरं।
व्यवहरतु परमपावनमनन्यजय्यस्वभावभावगभीरम्।।30।।

अपराजेय गंभीर स्वभावी, अर्हत् नद है सर्वोत्कृष्ट।
न्हवन हेतु उतरें हम उसमें, पाप दूर हों सर्व अनिष्ट।।30।।

ॐ ह्रीं श्रीगौतमस्वामिकृतस्नानफलयाचनायुत–अर्हन्महानदीतीर्थसमन्विताय श्रीचैत्यभक्तिमहास्तोत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।30।।

अताम्रनयनोत्पलं सकलकोपवह्नेर्जयात्
कटाक्षशरमोक्षहीनमविकारतोद्रेकतः ।
विषादमदहानितः प्रहसितायमानं सदा
मुखं कथयतीव ते हृदयशुद्धिमात्यन्तिकीम्।।31।।

क्रोधाग्नी के विजय से जिनके, नेत्र कमल हैं लाल नहीं।
निर्विकार उद्रेक रहित हैं, न कटाक्ष के बाण कहीं।।
खेद और मद से वर्जित हैं, प्रहसित मुख हो ज्ञात सदा।
शुद्धि हृदय की अविनाशी है, मानो ऐसा कहें तदा।।31।।

ॐ ह्रीं श्रीगौतमस्वामिकृत–अताम्रनयनादिवीतरागतामंद–मंदमुस्कानममुखकमल–सहितमहावीरतीर्थंकरवंदनासमन्विताय श्रीचैत्यभक्तिमहास्तोत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।31।।

निराभरणभासुरं विगतरागवेगोदयात्–
निरंबरमनोहरं प्रकृतिरूपनिर्दोषतः।
निरायुधसुनिर्भयं विगतहिंस्यहिंसाक्रमात्,
निरामिषसुतृप्तिमद्विविधवेदनानां क्षयात्।।32।।

रागोदय का वेग लुप्त है, निराभरण हो दीप्तीमान।
प्रकृति रूप निर्दोष निरंतर, मनहर, दिखते आभावान।।
रहित हिन्स्यहिंसा के क्रम से, निर्भय अस्त्र शस्त्र से हीन।
विविध वेदना के क्षयकारी, निराहार सुतृप्ति प्रवीन।।32।।

ॐ ह्रीं श्रीगौतमस्वामिकृत–वस्त्राभरणायुधभोजनविरहितप्रकृतिरूपमनोहरमुद्रा–सहितमहावीरप्रभुवंदनासमन्विताय श्रीचैत्यभक्तिमहास्तोत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।32।।

मितस्थितनखांगजं गतरजोमलस्पर्शनं
नवांबुरुहचंदनप्रतिमदिव्यगन्धोदयम् ।

रवीन्दुकुलिशादिदिव्यबहुलक्षणालंकृतं
दिवाकरसहस्रभासुरमपीक्षणानां प्रियम्।।33

नख अरु केश बढ़ें न जिनके, रज मल के स्पर्श विहीन।
दिव्य गंध का उदय हुआ ज्यों, सुरभित चंदन कमल नवीन॥
सूर्य चन्द्रमा वज्र आदि शुभ, लक्षण शोभित हैं मनहार।
नयनप्रिय हैं दीप्तिमान शुभ, ज्यों शोभित हों सूर्य हजार।।33॥

ॐ ह्रीं श्रीगौतमस्वामिकृत-दिव्यसुगंधितदिव्यलक्षणसहस्रसूर्यप्रकाशाधिक-भासुरदेहयुतमहावीरप्रभुवंदनासमन्विताय श्रीचैत्यभक्तिमहास्तोत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।33।।

हितार्थपरिपंथिभिः प्रबलरागमोहादिभिः
कलंकितमना जनो यदभिवीक्ष्य शोशुध्यते।
सदाभिमुखमेव यज्जगति पश्यतां सर्वतः
शरद्विमलचन्द्रमंडलमिवोत्थितं दृश्यते।।34।।

जीवों का हित श्रेष्ठ मोक्ष है, राग मोह अरि प्रबल सुजान।
कलुषित मन वाले लख जिनको, अति निर्मल होते गुणवान॥
जग में चारों ओर दिखाई, देते हैं सम्मुख भगवान।
शरद ऋतू के चन्द्र बिम्ब सम, उदित दीखते हैं अभिराम।।34॥

ॐ ह्रीं श्रीगौतमस्वामिकृत-प्रबलमोहरागादिदूषितजनसमूह-अवलोकनमात्र-पावनकारणजिनमुखकमलवंदनासमन्विताय श्रीचैत्यभक्तिमहास्तोत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।34।।

तदेतदमरेश्वरप्रचलमौलिमालामणि -
स्फुरत्किरणचुंबनीयचरणारविन्दद्वयम् ।
पुनातु भगवज्जिनेन्द्र! तव रूपमन्धीकृतं
जगत् सकलमन्यतीर्थगुरुरूपदोषोदयैः।।35।।

झुकते देव इन्द्र के मुकुटों, की माला के मणी महान्।
चमकीली किरणों से दोनों, चुम्बित चरण प्रभू के जान॥
ऐसा रूप आपका है यह, अन्य तीर्थ से जगत भरे।
कुगुरु आदि के दोशोदय से, अंध लोक को शुद्ध करे।।35॥

ॐ ह्रीं श्रीगौतमस्वामिकृत-अन्यतीर्थोपासनाभिरंधीकृत-सकलजगत्पावनया-चनाफलसमन्विताय श्रीचैत्यभक्तिमहास्तोत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।35।।

अंचलिका

इच्छामि भंते! संति भक्ति-काउस्सगो कओ, तस्सालोचेउं पंच-महा-कल्याण-संपण्णानं, अट्ठमहापाहिडेर-सहियाणं, चउतीसातिसय-विसेस-संजुत्ताणं, बत्तीस-देवेंद-मणिमय मउड मत्थय महियाणं बलदेव वासुदेव चक्कहर रिसि-मुणि- जदि-अणगारोव गूढाणं, थुई-सय-सहस्स-णिलयाणं, उसहाइं-वीर-पच्छिम-मंगलं-महापुरिसाणं णिच्चकालं, अच्चेमि, पूज्जेमि, वंदामि, णमस्सामि, दुक्खक्खओ, कम्मक्खओ, बोहिलाओ, सुगइमगणं समाहि-मरणं जिण गुण सम्पत्ति होदु मज्झं।

समुच्चय जयमाला

दोहा- कृत्रिमाकृत्रिम चैत्य हैं, मंगलमय अविकार।
जयमाला जिनकी विशद, गाते बारम्बार।।

(शम्भू छन्द)

कृत्रिमा कृत्रिम जिन चैत्यालय, तीन लोक में मंगलकार।
जिनकी अर्चा पूजा करते, प्राणी नत हो बारम्बार।।
भवनवासी देवों के चित्रा, भू के नीचे भवन महान।
दश प्रकार के देव कहे जो, जिनगृह जिनमें आभावान।।1।।
सप्त कोटि अरु लाख बहत्तर, अधोलोक में हैं जिनधाम।
शाश्वत अकृत्रिम गाए जो, जिनको बारम्बार प्रणाम।।
मध्य लोक में गिरि तरु शाखा, आदिक में श्री जिन के धाम।
चार सौ अठ्ठावन हैं पावन, जिनको बारम्बार प्रणाम।।2।।
ढाई द्वीप के अन्दर ऋषिमुनि, विद्याधर भी करें विहार।
देव भक्ति से आकर करते, जिन पद वन्दन बारम्बार।।
ऊर्ध्व लोक में लाख चुरासी, सह सत्यानवे तेइस विमान।
जिनमें जिनगृह जिनबिम्बों युत, शोभित होते आभावान।।3।।
व्यन्तर देवों के गृह शाश्वत, बतलाए हैं संख्यातीत।
जिनकी अर्चा देव करें सब, करके अपना चित्त पुनीत।।

ज्योतिष देवों के विमान शुभ, मध्य लोक में अधर रहे।
संख्यातीत जिनालय जिसमें, तीन लोक में पूज्य कहे।।4।।
रत्नमयी जिन चैत्य वन्दना, गणधर करे असुर नर देव।
भक्तिभाव से अर्चा करके, पुण्यार्जन जो करें सदैव।।
काल अनादी चैत्य वन्दना, का गौतम ने किया बखान।
वीर प्रभू की दिव्य देशना, गणधर झेले महति महान।।5।।
चैत्य वन्दना करने वाले, प्राप्त करें सम्यक् श्रद्धान।
रत्नत्रय के धारी बनकर, अनुक्रम से पावें निर्वाण।।
जो प्रत्यक्ष परोक्ष वन्दना, करते विशद भाव के साथ।
अतिशय पुण्य सुनिधि पाकर वे, बनते मोक्ष सुनिधि के नाथ।।6।।

दोहा- **शाश्वत जिनगृह, पूज रहे हम नाथ!।**
भक्ति भाव से तव चरण, झुका रहे हैं माथ।।

ॐ ह्रीं श्री गौतम स्वामीकृत चैत्यभक्ति महास्त्रोत वर्णित तीर्थंकर वन्दना सर्व कृत्रिम अकृत्रिम चैत्य चैत्यालयेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- **जिनगृह जिन त्रय लोक के, गाए पूज्य महान।**
भाव सहित जिनका 'विशद', करते हम गुणगान।।

समुच्चय महार्घ्य

अर्हत् सिद्धाचार्य उपाध्याय, सर्व साधु के चरण नमन।
जैनागम जिन चैत्य जिनालय, जैन धर्म को शत् वन्दन।।
सोलह कारण धर्म क्षमादिक, रत्नत्रय चौबिस तीर्थेश।
अतिशय सिद्धक्षेत्र नन्दीश्वर, की अर्चा हम करें विशेष।।

दोहा- अष्ट द्रव्य का अर्घ्य यह, 'विशद' भाव के साथ।
चढ़ा रहे त्रययोग से, झुका चरण में माथ।।

ॐ ह्रीं श्री अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, सर्वसाधु, सरस्वती देव्यै, सोलहकारण भावना, दशलक्षण धर्म, रत्नत्रय धर्म, त्रिलोक स्थित कृत्रिम-अकृत्रिम चैत्य-चैत्यालय, नन्दीश्वर, पंचमेरु सम्बन्धी चैत्य-चैत्यालय, कैलाश गिरि, सम्मेद शिखर, गिरनार, चम्पापुर, पावापुर आदि निर्वाण क्षेत्र,

अतिशय क्षेत्र, तीस चौबीसी, तीन कम नौ करोड़ गणधरादि मुनिश्वरेभ्यो समुच्च महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(पुष्पक्षेपण करते हुए शांति पाठ बोले)

शांतिपाठ

शांतिनाथ शांति के दाता, भवि जीवों के भाग्य विधाता।
परम शांत मुद्रा जो धारे, जग जीवों के तारण हारे।।
शरण आपकी जो भी आते, वे अपने सौभाग्य जगाते।
शांतिपाठ पूजा कर गाएँ, पुष्पांजलि कर शांति जगाएँ।।
जिन पद शांती धार कराएँ, जीवन में सुख शांति पाएँ-3।
जीवों को सुख शांति प्रदायी, धर्म सुधामृत के वरदायी।।
शांतिनाथ दुख दारिद्र नाशी, सम्यक्दर्शन ज्ञान प्रकाशी।
राजा प्रजा भक्त नर-नारी, भक्ति करें सब मंगलकारी।।
जैन धर्म जिन आगम ध्यायें, परमेष्ठी पद शीश झुकाएँ।
श्री जिन चैत्य जिनालय भाई, विशद बनें सब शांति प्रदायि।।

ॐ शांति-शांति-शांति

(दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्) (कायोत्सर्ग करें)

विसर्जन पाठ

भूल हुई हो जो कोई, जान के या अन्जान।
बोधि हीन मैं हूँ विशद, क्षमा करो भगवान।।
ज्ञान ध्यान शुभ आचरण, से भी हूँ मैं हीन।
सर्व दोष का नाश हो, शुभाचरण हो लीन।।
पूजा अर्चा में यहाँ, आए जो भी देव।
करूँ विसर्जन भाव से, क्षमा करो जिन देव।।

।।इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

(ठोने में पुष्पक्षेपण करें)

आशिका लेने का मंत्र

पूजा कर आराध्य की, धरे आशिका शीश।
विशद कामना पूर्ण हो, पाएँ जिन आशीष॥

श्री गणधर (गणेश जी) चालीसा

दोहा- आदिनाथ से वीर तक, तीर्थंकर चौबीस।
जिनके चरणों में विशद, झुका रहे हम शीश॥
दिव्य देशना झेलते, गणधर ऋषी महान्।
चालीसा गाकर यहाँ करते हम गुणगान॥

चौपाई

जय-जय तीर्थंकर शिवकारी, तीन लोक में मंगलकारी॥1॥
पुण्योदय जिनका शुभ आये, वह तीर्थंकर पदवी पाए॥2॥
पावन केवल ज्ञान जगावें, समवशरण तव देव रचावें॥3॥
ॐकारमय जिनकी वाणी, खिरती जग में जन कल्याणी॥4॥
गणधर होते ऋद्धीधारी, प्रथम कोष्ठ में अतिशयकारी॥5॥
मुनिगण के स्वामी जो गाए, पावन गणनायक कहलाए॥6॥
लघुनन्दन जिनवर के प्यारे, जिनवाणी के राज दुलारे॥7॥
सम्यक्दर्शन ज्ञान जगाते, गणधर सम्यक् चारित पाते॥8॥
पञ्च महाव्रत समिति के धारी, होते पंचेन्द्रिय जयकारी॥9॥
समवशरण में दीक्षा पावें, पावन चार ज्ञान प्रगटावें॥10॥
होते हैं जो पञ्चाचारी, सबको पलवाते अविकारी॥11॥
शिष्यों के जो गुरु कहाते, सुर-नर-मुनि से पूजे जाते॥12॥
द्वादश गण के स्वामी गाए, गणाधीश गणपति कहलाए॥13॥
दिव्य देशना झेलें भाई, जो है जन-जन के हितदायी॥14॥
मंगलमूर्ति अमंगलहारी, नाम अनेक रहे शुभकारी॥15॥
सिद्ध मनोरथ आप कराते, सिद्ध विनायक अतः कहाते॥16॥
गणपति आप गणेश कहाते, नाम गणाधिप प्राणी गाते॥17॥
जिस घर में चर्या को जाते, अन्नपूर्ण वे घर हो जाते॥18॥

चक्री सेना वहाँ पे आए, सारा कटक वहाँ जिम जाए।।19।।
इस प्रकार ऋद्धी के धारी, गणधर होते अतिशयकारी।।20।।
इनके चरणों की रज पाये, रोग-शोक वह पूर्ण नशाये।।21।।
इच्छित फल वह प्राणी पाए, अपना जो सौभाग्य जगाए।।22।।
जल थल नभ पुष्पों पर भाई, फलों पे चलते हैं सुखदायी।।23।।
मेघ धूम मेघों पे चलते, फिर भी पैर कभी ना जलते।।24।।
निष्पृह भू पे चलते जाते, फिर भी जीव कष्ट ना पाते।।25।।
गणधर को जो प्राणी ध्याते, कष्ट दूर जिनके हो जाते।।26।।
गणाधीश गुरु करुणाकारी, ऋद्धी होती सब दुखहारी।।27।।
चिन्ता भारी रोग बढ़ाए, चिन्तन से वह ना रह पाए।।28।।
गणधर के गुण प्राणी गाए, वह अपना व्यापार बढ़ाए।।29।।
कर्जे से प्राणी दब जाए, उससे भी मुक्ती मिल जाए।।30।।
निर्धन भारी दौलत पाए, बिगड़े सारे काम बनाए।।31।।
यात्रा उसकी हो सुखकारी, दूर होय सारी बीमारी।।32।।
आकस्मिक दुर्घटना होवे, जिससे प्राणी जीवन खोवे।।33।।
प्राणी यदि घायल हो जाए, भक्ती से बहु शांती पाए।।34।।
अज्ञानी सद्ज्ञान जगाए, शिवपुर का राही बन जाए।।35।।
बुद्धी बल हर प्राणी पाए, गणधर को जो मन से ध्याए।।36।।
आधि-व्याधि के होते नाशी, गणधर होते ज्ञान प्रकाशी।।37।।
गणधर को जो पूजे ध्याए, गणधर वलय विधान रचाए।।38।।
पावन मुनि की दीक्षा पाए, वह प्राणी गणधर बन जाए।।39।।
'विशद' यहाँ चालीसा गाए, गणधर बन शिवपदवी पाए।।40।।

दोहा- चालीसा चालीस दिन, पढ़ते हैं जो जीव।
सुख शांती सौभाग्य पद, पाते पुण्य अतीव।।
रोग-शोक दुख दूर हो, नश जाएँ सब पाप।
बढ़े भाग्य सुख सम्पदा, किए भाव से जाप।।

जाप्य- ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा झ्रौं झ्रौं नमः।

श्री महावीर स्वामी की आरती

(तर्ज : कंचन की थाली लाया.....)

रत्नों के दीप जलाए, चरणों में तेरे आए।
भावों से करने थारी आरती, हो वीरा हम सब उतारे तेरी आरती।।टेक।।
कुण्डलपुर में जन्म लिए प्रभु, मात पिता हर्षाए।
धन कुबेर ने खुश होकर के, दिव्य रत्न वर्षाए।।
इन्द्र भी महिमा गावे, भक्ति से शीश झुकावे।
भवि जन करते हैं तेरी आरती, हो वीरा...।।1।।
चैत शुक्ल की त्रयोदशी को, जन्म जयन्ती आवे।
नगर-नगर के नर-नारी सब, मन में हर्ष बढ़ावें।।
प्रभु को रथ पे बैठावें, नाचे गावें हर्षावें।
सब मिल उतारे थारी आरती, हो वीरा...।।2।।
मार्ग शीर्ष कृष्णा तिथि दशमी, तुमने दीक्षा धारी।
युवा अवस्था में संयम धर, हुए आप अनगारी।।
आतम का ध्यान लगाया, कर्मों को आप नशाया।
श्रावक करते है थारी आरती...हो वीरा।।3।।
दशें शुक्ल वैशाख माह में, केवल ज्ञान जगाये।
कार्तिक कृष्ण अमावश को प्रभु, 'विशद' मोक्ष पद पाए।।
पावापुर है मनहारी, सिद्ध भूमी है-प्यारी।
जिनबिम्बों की करते हम, आरती हो वीरा...।।4।।

आचार्य श्री विशद सागर जी का अर्घ्य

प्रासुक अष्ट द्रव्य हे गुरुवर! थाल सजाकर लाये हैं।
महाव्रतों को धारण कर लें मन में भाव बनाये हैं।।
विशद सिंधु के श्री चरणों में, अर्घ समर्पित करते हैं।
पद अनर्घ हो प्राप्त हमें गुरु, चरणों में सिर धरते हैं।।
ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री 1008 महावीर स्वामी की आरती

ॐ जय महावीर प्रभो!, स्वामी जय महावीर प्रभो!
समवशरण में आप विराजे-2, हे जिन वीर प्रभो!
ॐ जय महावीर प्रभो!

आषाढ़ सुदी षष्ठी को, गर्भ में प्रभु आए-2
दिव्य रत्न तब देव खुशी से-2, आके वर्षाए॥
ॐ जय.....॥1॥

कुण्डलपुर में जन्म लिये प्रभु, जन मन हर्षाए-2
चैत शुक्ल तेरस को-2, अति मंगल छाए॥
ॐ जय.....॥2॥

मंगशिर वदि दशमी को, प्रभु वैराग्य लिये-2
राज-पाट-परिवार-स्वजन से-2, नाता तोड़ दिए॥
ॐ जय.....॥3॥

दशमी सुदि वैशाख माह में, केवल ज्ञान जगा-2
समवशरण तब राजगृही में-2, अतिशयकार लगा॥
ॐ जय.....॥4॥

कार्तिक वदी अमावस को प्रभु, हुए मोक्ष गामी।
'विशद' आपकी आरती करके-2, करते प्रणमामी॥
ॐ जय.....॥5॥

ॐ जय महावीर प्रभो! स्वामी जय महावीर प्रभो!
समवशरण में आप विराजे-2, हे जिन वीर प्रभो!
ॐ जय जय महावीर प्रभो!॥टेक॥

गणधर की आरती

(तर्ज- भक्ति बेकरार है...)

गणधर जी अविकार हैं, अतिशय मंगलकार हैं।
चौबीस जिन के गणधर की हम, करते जय-जयकार हैं।।
जिन तीर्थंकर केवल ज्ञानी, अनन्त चतुष्टय पाते जी।
स्वर्ग लोक के देव सभी मिल, समवशरण बनवाते जी।।
गणधर जी...

दिव्य देशना देकर जिनवर, भव्यों का तम हरते हैं।
चार ज्ञान के धारी गणधर, उसको झेला करते हैं।।
गणधर जी...

नर त्रिर्यंच अरु देव सभी मिल, समवशरण में आते हैं।
अपनी-अपनी भाज़ा में गुरु, अलग-अलग समझाते हैं।।
गणधर जी...

दीक्षा धारण करते ही मुनि, चार ज्ञान प्रगटाते हैं।
मति श्रुत अवधि मनः पर्यय शुभ, चार ज्ञान यह पाते हैं।।
गणधर जी...

विशद साधना करने वाले, आतम ज्ञान जगाते हैं।
बुद्धि विक्रिया चारण आदि, श्रेष्ठ ऋद्धियाँ पाते हैं।।
गणधर जी...